



हउं श्री उतु काये नमः ॥ वन्द्य सदा सकल कोलिक सावयन कृष्णध्वज
 नमः कयालकदन्तमाल ॥ खडा अख अवनयन का इरुल्ल ताव हिरा वि
 सुवनध्वज वसुधाया ॥ १ ॥ कल्याण ॥ ॥ श्री सासनयदूक नाथ ॐ ति
 सुसिद्ध कन्दसू नाविजानकानन भूमक र्यु (गीत्रीरुते ३) स गति मूला लता
 दधान ३ या या लवक वसना निविवाह नाव ॥ २ ॥ वदूक ॥
 सिन्दूर सा तुमदमूर्द्धितानक केश निजिह्यनायन यथा धवेद रुस

भवितुकुत्तव वनमादक साकुरु या या दयंग गदायति ३ सकलाथया
 ॥ ३ ॥ गलाया ॥ ॥ श्री सासनयदूक नाथ ॐ ति
 जगन्मा विद्योष्टी चावूनगायथ गवज दाना मय लावन् (गी) सादवी (गवसु
 ६) लावन्सु मधवावर्ष वाक ३ लाव सा मथी कूडिकाया विगव गुसगा
 झनदियो यमाय ॥ ४ ॥ ॥ कूडिकाया ॥ सादवी मधूकट रुयम
 नी यावधुमू (अ) किनी यामातामहि वासुदय कवी यावक वीजाय ॥

आसायुक्कनिधुक्कचुदनलीयादवदंवाकिनीसादवीतववक्कदक्क
लुङ्गवक्कसदावधुक्क॥१॥आदवीमहिवासुत्रस्यवृधिवर्महाठलासुक्क
इमद्रुक्कसविगाचदंनववलदगालरुगवर्त॥२॥नश्यतीविजुदुदय्यदल
नीवाक्कस्युतायाविधुक्कसिक्काविहीरुगवतीकात्यायीयासुव॥३॥
याकालीवलकालिनीकिलकिलायावक्कसक्काकलक्काजाक्काकदयुतने॥
कटिलसक्ककालमालामर्त्य॥४॥कालालेवगुवदुचक्कदलनेजाग॥५॥सू

नादिनीयायाद॥सनिधुक्कनिधुक्कमथनीयायाविहीरुगवती॥६॥पूर्व
हिलारुगवतीखलुवुदचउपीतावलाविद्ययनाववयीनदला॥वजादि
सायुधधवाचदिवरुक्काकल्यानमाददुदंलुविनाशकावी॥७॥यासु
म्यामधीवागिरुगवतिवुदयुवधुदिलिक्कादीयमयक्कायादिवक्कल्यस
उगिनीमखिता॥गुक्काधेक्कनधूयदीयगधुहिवल्लानवम्यावितास्यो
कदशमीययानवविताचधुक्कायासुव॥८॥॥कृष्णल्लाजसर्वयथ

वज्रगर्भं चक्रवर्त्तं विनयं हाजालं जाहिरुयं जूहिकूलरुत्रदीनचन्द्रार्क
वक्रि। यिल्लं दं विद्रकं कलनेमिव समाघात उष्णकवाले माय विस्मयकना
थ्रियुजमदलत्वं माहाकावदवनमामि ॥ ॥ महाकालवलिया ॥
कृष्णानामाश्रित्य सर्वकलजगतनूरुं ववविश्वकलो गाधं जालोमहं सुसक
लकूलयुगं रुं ववचऊर्ध्वं । ज्ञानं विनोनाथं कववसयुक्तिं वटयुलं
निर्मुखां सोत्रयातात निवृत्तं विरुगलं सहितं जाहिमां कुरुयालं ॥

कुरुवलिया ॥ ॥ यागिमाकासवृत्तासकलमुल्लहता तल्लकरुद्रावाहाम
लाकं कालमालागलटगलटटीनकवक्रां वीया । निगयां कियालाक
जाकवविष्टतामृत्तितासुयसन्ना रुक्मानां साधकानां मेरिमतदुल्लदाध्रय
मालयसन्ना ॥ ॥ यागिणीया ॥ वामधुवधुवृत्ताप्रकटितदङ्गाया
वड्वाकलावायोडी त्रिमांसदहादालितानि विनिखाकालकमी विभज्ज ।
देखानिमेषु मालादुनिमुदामहिरिथारिहिरुं विताडी सदाजयय

हस्तप्रसूतममवियुचिर्जायतहस्तः ॥ ॥ **चानुष्टुभ्या** ॥ नमस्तु द
वदवः स रं ववायमहात्मने । महाश्रयश्चक्षुः स तं लाकारिधवाय
यशः ॥ **आथलाह्या** ॥ गानुसतीयु नि निरागन्तुजसनहामुक्ति
नयकजु मरुतीनुवशो वनाद्या । शिखासिचक्रगदया कितचा नूहस्तः
धीवैश्वरी सनत्मी नि सदाय सदा ॥ ॥ **दलुजिया** ॥ गदाध्वन
महाकाय शेषनामानेखधुनी नवनाग सह प्रावि वाह विर्यनमा

महः ॥ ॥ **प्रारिमया** ॥ शिवशक्तिस्त्रयाय व्यापिन सर्वरुचि न ।
सर्वरूपसया कि नमस्तु रतत्वा मित्र ॥ ॥ **अथालेव्या** ॥ शक्ति
यनमस्ति नामधू विपुलैरुति संक्षिप्तं यवावायूवति जलो शिवनग
यायप्रसहजया । अग्निशायुव्याकृता शिवथ गं नो गेन थदव ॥ शिव
धुव विष्णु विगावह विष्णु शक्ति यवा नो मिता ॥ ॥ **अथालेव्या** ॥
हिंसासनमहालक्ष्मी सनाथ विद्मस्तिका ॥ अथ तव धु विष्णु शक्ति चक्र

नमः
सवि
ता
वावा
स॥

श्वरीनमस्तुत ॥ अथ कथा ॥

ध्वनीनमाहुत ॥ अथ कथा ॥ १ ॥ वनोद्यधी सकलतीर्थजलनयधु सङ्ग
यन्त्रवरुणा शिवायुष्यमाला ॥ यक्षयुगाक्ष विद्ययमूनिहि ॥ यस्तुक्तं तं कुरु म
निवेशाकियुगनमोमि ॥ ॥ कुरु मया ॥ अथ कथा ॥ अथ कथा ॥ अथ कथा ॥

नाहिवीवनः॥ कयय शुभामध मायैधुयचरनमः॥ ॥ सयुधया
॥ नाकासिन्दुवतः॥ जतकूमनिसा नकवकापिनशासायादस्तायुजक्ति
शुसिरुलेकेधवि विन्दुकायालरुसा शिरुसासोम्याउय मकनडयक

श्री सर्व सिद्धार्थ कानी ॥ ऐसा कयूजनी या सकल उर कनी रुधुद यो नमस्तु ॥
 ॥ कृष्ण ॥ ॥ ई नमस्तु ॥ श्री गुरुदेव ॥ सर्व सद्गुरु सद्गुरु
 सर्व लक्षण सद्गुरु ॥ कवच की लनाद या ॥ सर्व याये पुत्र यात ॥ नि निमये
 यथावेना विषम इन्द्र मयि वा ॥ यता सन स्थावा मष्टा वावाही महिषा
 सना ॥ निरुदी गऊ मोनूरा वेष्टी गऊ शसना ॥ मादध्वनी वृथा वृथा कोमा
 गीनि सिवा रुना ॥ वाक्की रुस मा वृथा सर्व रुव रु विता ॥ क नका रु

विमानस्त्री वनयशाववायुधा ॥ देहानां नरुनां प्रभय रुक्मानामरुया
यव ॥ गहिमान्द विचामु ॥ सर्वे गुरुयुक्तयद्वी ॥ यायात्रिगुमाहृदी आध्या
मयवाहिनी ॥ दक्षि ॥ एतैव वागोही नैमृत्वा स्वप्नधा विला ॥ यतीयावात्र
धीनरु ॥ वायुयां मगवाहिनी ॥ उदीयात्रिगुकोमानी ॥ ॐ ॥ ग्यागुलधनि
दी ॥ उद्वेवक्रालिभनरु दधेविवगुर्वेवृवी ॥ नुवदशदि ॥ वात्ररु ॥ वाम
धुगववाहनी ॥ अयामैवायतस्याउ विजयाह्राउपृष्टग ॥ अहिगोवा

मया ॥ एव दक्षि ॥ एवायवाजिता ॥ निखामशा ॥ गिनीनरु इमामुद्रियवहि
ता ॥ मालाधनी ललाटयवृवीनरु ॥ यशस्विनी ॥ निमलावृवोम ॥ धा य
मद्यधायनाजिका ॥ गंस्विनावृवृधोम ॥ धा यशादाववहिनी ॥ कयालो
कालिकावृवृ लुमुल्लगुधकलि ॥ नाजिकायां मगभात्रगुवृवृवृवृवृवृ
॥ अथत्रयामगकला जिह्वायां मगवृवृ ॥ दक्षा ॥ वृवृवृकोमानी कण्ठम ॥ धा
पुवृवृवृ ॥ धावृवृकाविगुध ॥ धावृ मरुमायावृवृवृ ॥ कामाख्यावि

वृकं वक्रं वायं म सर्वमद्रुला ॥ ग्रीवायां रुड कालीय एष्टव (अधनू धनी ॥
नील ग्रीवा वहि १ क (१) नलिकानलक वली ॥ लं धया १ खड्ग रुक्ता च वाक
(प्रवक्ष्य विधी ॥ द रुया दे पुद रुा गु या चिको वां गुली ग थो ॥ न खानल
धनी व क १ कूक नील धनी तथा ॥ रु नो व क म हा द वी मन ॥ (१) क वि ना जि
नी ॥ ह द य ल ली ता द वी रु द ल गू ल धा वि धी ॥ ना हि च का मि नी व क गु ड
गु ड धनी तथा ॥ म ड न क गु ड यो च क यो रु ग व ती तथा ॥ डं ध म हा

व ला या का जा नू य (१) वि ना य की ॥ गु रु या नो व सि ही च या द एष्ट मि
तो ड सा या द रु ली धी धनी स या स ध रु ल वा सि नी ॥ इष्टा कला लि
नी व क क शा न ड ड क नि नी ॥ वा म कू या नि को व नी ल व वा ल धनी ग
था ॥ व क व रु वि शा म था ल रि म भ गु या व ती ॥ अं ग नि काल वा यी च
वि रु च मू कू ट धनी ॥ य प्रा व ती य प्र का थ क रु चू ज म टी तथा ॥ का
ला म यी न खा द्वा ला म रु द्या सर्व स धि वू ॥ इष्ट व कालि म व क १

आयाचुवध्वनीतथा ॥ अहं कालमनायुधि नरकमधर्मध्वनिः ॥ या ॥ ५॥
या ॥ ५॥ तथानुदानं सप्तमो नया ॥ वज्रदत्तायुधमनकन्यालोकस्थान
॥ ५॥ रुना ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ अत्र साधुगणव्यतिरी ॥ सुखं वज्रकमलेन
नरकनायायली ॥ ५॥ आयुधमनुनायाही धर्मनरकल वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ५॥
रुमहालक्ष्मी लायात्रिकलुहे नवी ॥ विलेनकलुवेदा लिचाय ॥ ५॥
वर्तयन्ति यथैव यथा निमनक ॥ विजने सर्वसंहिता ॥ ५॥

यस्यने वज्रितीकयचनयु ॥ तत्सर्वं नरकमद विजयनी यायना निनी ॥ ५॥
रुमे सर्वं नया ॥ ५॥ इत्युक्तं यो ह विनी ॥ वन्दनकवचं दिवी निरुधाय ५॥
॥ ०॥ त्रयं ॥ सर्वं याय विनिर्मुक्तं ॥ अनामये नाजिता ॥ यत्प्रदं कवचं कला
संश्रमय विनी त्रयं ॥ स सर्वदा त्रिपुरसुखं निर्विहस्य ५॥ यथा ॥ मह
ध्वनकतीकवचं सकलं तत् ॥ ५॥ ॥ ५॥ ॥ ५॥ ॥ ५॥ ॥ ५॥ ॥ ५॥ ॥ ५॥
सती ५॥ ५॥ सिद्धि हो जनायते ५॥ लाक्षा रुव विजय ॥ ५॥ ॥ ५॥ ॥ ५॥ ॥ ५॥

नाम ददमया तद्वभना ॥ यूगाधीनरुतयुग धनाधीनरुतधन ॥ अरु
यो लरुत रुतयो यसाथोयसमायुया ॥ ॐ हिरुतलरुतकोम रुव नये मि
वन्नरु ॥ ॥ ॐ हिरुतलरुतकोम रुव नये मि
॥ श्री गुरु उवाच ॥ नमो ॥ मुगमरु मायसु रुद रुय वायव ॥ ॥ का
कि न विरुदासा नादा सा विरुमा नि नि ॥ अरु रुत असम रुत न अरु व विरु
॥ ॥ मरु रुत रुत नी नि रुत रुत मया वाव रुत ॥ ॥ सो मरु रुत रुत

॥ श्री गुरु उवाच ॥ नमो ॥ मुगमरु मायसु रुद रुय वायव ॥ ॥ का
कि न विरुदासा नादा सा विरुमा नि नि ॥ अरु रुत असम रुत न अरु व विरु
॥ ॥ मरु रुत रुत नी नि रुत रुत मया वाव रुत ॥ ॥ सो मरु रुत रुत
॥ श्री गुरु उवाच ॥ नमो ॥ मुगमरु मायसु रुद रुय वायव ॥ ॥ का
कि न विरुदासा नादा सा विरुमा नि नि ॥ अरु रुत असम रुत न अरु व विरु
॥ ॥ मरु रुत रुत नी नि रुत रुत मया वाव रुत ॥ ॥ सो मरु रुत रुत

॥ जे ला क उ न नी द वि न म रु ग कि व य ए ॥ ॐ ज यि म ल म धा लु म
 ए ल म रु नु यि ए ॥ वि नु म धा ग ता द वि कु टिल ना द वा डि क रु या व न
 नि का हा स द्वा द ग म का व ल नि नि ॥ उ मा द ह द ग लो नी द्वा द ॥ दि हा
 व र्व स ॥ गू ना गू या न्म वा व रु हं सा ख पा ए धा नि ति ॥ ल म्बा ख य न
 मा द वि द हि ॥ रु व ग मि नि ॥ ना हा ॥ य रु स मू ली ॥ म धा म रु य वा दि
 नी ॥ ह रु ख य व मा न रु ताल म रु द्रि या व रि म ॥ ना द य नि क र्ते य रु

[illegible]

गुरुसमवर्ति ॥ लमलीशानदीलोमी मायायनुप्रवाहिनी ॥ खड्ग
हेनवीदविसका ॥ धामरुहेनवी ॥ यक्षगदुप्रयस्कात्रयादुडा ॥ युकी
लिता ॥ अमृताख्यपुन्य ॥ नमश्कायालिनीनिव ॥ नूकिनिमहामा
यनमरुछत्रुहेनवि ॥ देहाकटविशूक्तितावकाकिरुयानन ॥ नमा
मिदवदेवशि ॥ अद्यावद्यावपुषिदी ॥ द्वालामुखीवगवती ॥ उमादवि
नमासुत ॥ यागेत्रीवप्रियादवि ॥ लोनीलसीसवस्वती ॥ हसस्वती

मदवि ॥ लामुखीगकिमालिनी ॥ काकुकीगुरुमादवीदुर्गोकायायनीनि
वा ॥ निरीकिनासमाख्यागात्रकात्रकात्रायरा ॥ वाप्रीध्वनीचेतकोमानी
वेष्वतीगेथ ॥ वानाहविममाहृषीयामुष्टात्ररुयानन ॥ यागालिलदि
वलिक्कुलावृकविरुवित ॥ नुदीववुआ ॥ त्रीयीयामानेहसवावृदी ॥
काययात्रेवकोववी ॥ लीशानमसुदाहता ॥ ययागववृधकात्राजुह
माऊयनिका ॥ नविनेकायक ॥ खेवदवीकायगुवाधुम ॥ अलितालाव

वृधे ३१ काष्ठ उ मरुते नव शक बाली सी मदी ध्वेय स हान ध्वेय वाद्यथा ॥
तथा काली ममादवी दवदगी नमा मृता ॥ रुद्र काली मरुद वि चर्म मू ६३
रुयावह ॥ महा च भ्रम महा शक्त नमस्त शक्ति वृषिणी ॥ रुद्र व १ श्रुति स्था ॥
हो क दया लं हि क वृषम ॥ ज्ञानार्थि नाम हामाय वत दिक्का मि व दिरु ॥
यस्मि दय ० त कान शि स ध्ये वमानव ॥ या प्राति विक्ति ता नू कामा नू ॥
दी धी रु व ति व ल्लरु ॥ ३१ ॥ ॥ वृत्ति जिवन कि म म न व म हौ

माया रुद्र १ ममार्क ॥ ॥ श्री स म्भरु म पु ला क कम द वि हितान न्य
शक्ति म मूली मा रु हि न्या य र रुद्र ल कूल कूल गरी य शक्त या न्या व द्वा ॥ च
लो १ य शक्त का न्या यून व यि क रुद्र १ वा ३ ॥ रुद्र हि स क दया शो मू हि म ल्था
रु स ख य व य ल व कू द वी कु मा र्थ श्री नार्थ व रु रु र्था न व न व के लि र्ता य
म रु द रु मा वी ॥ वि त सि द्धा व ता ल य थ म क लि यु र्ग का रु ॥ १ ॥ वा धि का
न र व वि वृ रु नि न्या न व यू व कू म र म म्भ दि व द्वा ॥ स कान र्थ य वि

[illegible]

वति गृह्णन् वा न ॥ वा जननि मि जन वा मदसिया सखे वा इ ४ खे वा गव्य वन क्षे वा मम शक्ति १
यसं रु व ॥ सा हि मा द व द व ॥ सर्व या ग रु वा रु व ॥ अन्य रु स व दी ना कि
तु भ व स व दी म म ॥ त स्मा क्का ल न रु व न व रु व रु य व म श्च त्र ॥ क म नो
म न्म सा वा या त ता न्ना न गा त म म ॥ म रु हि न कि या हि न रु कि ही न त ए
व व ॥ ज ग ह म अ न्न न च त व लि धे व त थ यून ॥ त ल्प रु क म ता न्द वी म या
ज्ञान न त क त ॥ १ ॥ अ क रु रु ल द नी रु या रु या म्भ रु ॥ य थ वा न य रु ना
ता क व च रु रु वा व दी ॥ त रु दे व वि द्या ता ना ॥ अ रु व रु वा व दी ॥ अ रु म

२७ उग्रयणी नक्षत्रम्

यद्यययायूज ॥ यद्राययायूज ॥ यग्राययायूज ॥ कर्णाययायू
ज ॥ कर्णुकाययायूज ॥ मयूनासनयायूज ॥ ध्वान ॥ वधूकानूदासंका
र्ण नक्षिकाटिसमयर्ण ॥ सूर्यविम्बनिगदवी ॥ वयहसितानना
बालयूपीमहामाया कोमानीश्वरयिणी ॥ शर्ककुरुदुर्जकाडी
पुष्पलिङ्गकिङ्कर्ण ॥ यशनागमलिमोहि मुक्तासंकालरुषिता

॥ निविनाउसमावृत्ति विद्यानं शाक्तिकाविद्या ॥ सोराश्रयदाल
श्री मायूकगयः धिर्यं सर्वकामध्वनीदवी सर्वशायिमहध्वनी ॥
आत्मादवीसदादवी कोमानीधरुमत्रला ॥ ध्यानयुष्यं यायूज ॥
रुगावतीकोमानी ॐ हागक २ ॐ ह तिष्ठ २ ॐ ह सत्रिदिगारुव २ ॐ
ह सत्रिद्वारुव २ ई ई ई ॥ गालगय ॥ अकृष्टधन ॥ दिव्यधन ॥

नकिमूदादर्शन ॥ विजसह ॐ दमर्चनमः विजसह ॐ दमार्चनमः
शानुजसह गायमनीयनमः विजसह ॐ दमर्चनमः विजसह
सह सिद्धनमः विजसह ॐ दमर्चनमः ॥ गुजलि ॥ ३ ॥ विजसह
कैकैमै ॐ कां कुं ॥ श्रीकोमोविकाविद्ययायूज ॥ वलि ॥ विजसह
नाउदकड ॥ यवकुं विपुसर्दनी ई ई ई सदावक २ हां मां

ॐ स ४ मृत्यु रु न न म मया यु ॥ वलि ॥ कौं ह द या य या यु ॥ कौं जि
न स या यु ॥ कौं जि खा य या यु ॥ कौं क व वा य ई या यु ॥ कौं न य
य या यु ॥ कौं अ क्रा य रु द या यु ॥ वलि ॥ अं व क्रा एी श्री या यु
॥ कौं मा रु ध्वी श्री या यु ॥ वं को मा वी श्री या यु ॥ ट्वे म् वी श्री या
यु ॥ रं वी रा ही श्री या यु ॥ यं न्द्रा य एी श्री या यु ॥ यं वा म्भु

श्री या यु ॥ अं म हा ल क्री श्री या यु ॥ वलि ॥ अं अं व द व धु ये या
यु ॥ न्द्रं व व धु ये या यु ॥ डं डं व धु ये या यु ॥ अं अं व धु
ना यिक या यु ॥ टं टं व धु ये या यु ॥ नं नं व धु व र्ण या यु ॥ डं डं
व धु व र्ण या यु ॥ अं अं व धु व र्ण या यु ॥ वलि ॥ सं ज या
ये या यु ॥ कौं वि ज या ये या यु ॥ सं अं जि गा ये या यु ॥ नं अं य वा

छितायेयायू॥ मंजुनीयायू॥ लंतनीयायू॥ वंमाहनी
 यायू॥ यज्ञाकर्षेयायू॥ कोंकण्यालाययायू॥ वांवदः
 कनाथाययायू॥ याथागिनीयायू॥ गंगालेश्याययायू
 के॥ प्रवीवलि॥ लूंन्दीययायू॥ लूंअग्रययायू॥ मूंजमाय
 यायू॥ रूंनेस्ययायू॥ रूंवनृधाययायू॥ सूंकुंदलाय

यायूज ॥ ईं ॐ नयायूज ॥ अं मूषयायूज ॥ उं दुर्वाययायूज ॥
 नृवंवलि ॥ ॥ उवस ॥ गं कीकनयूवदूनाथायधीयायूज ॥
 खवस ॥ ईं महाकोलायधीयायूज ॥ नृवंवलि ॥ नृवंवलि ॥ वलि मालि ॥
 काकणयालायवलिगृह २ खाहा ॥ वां वदूकनाथायवलिगृह २
 खाहा ॥ यां यागिनीयावलिगृह २ खाहा ॥ वां वां मूषुवलिगृह २

स्वाहा ॥ गंग गणपत वलि गृह स्वाहा ॥ उरुं महाकाव वलि गृह २ स्वाहा
॥ सर्वथा दश स्वा वलि गृह स्वाहा ॥ आकाश वायु यी ॥ स्वा वलि
गृह २ स्वाहा ॥ ॥ समय काय ॥ मनु काय ॥ हाय कतय ॥ स
मस्तु मस्तु यी ॥ ययी ॥ कथा यक ग सं दाय रु दिश सिद्धि समस्त यक
या इका यज्ञ या मि वलि गृह २ स्वाहा ॥ उका नूक यलि स्थि सर्व रु

दयायपाइकायूजयामिवलिंष्टद्रश्वाहा॥ ॥ ईदमलय
संरुगैचन्दनैदिमशीतरी।वीनजादुगुविनः ॥ गृहानममसिद्ध
य॥ ॥ वंदन॥ गुरुवद्वनरुगया। वीनवीनरुखनै। गृहा
लवीनवीनसि सिद्धनवग्रेदायक॥ ॥ सिद्धन॥ नानायय्यासु
गन्धानिमलरुपाकसंभादक। सीरागसिद्धिदेहद यय्यानास्ते

मूलमं ॥ ॥ खान ॥ रुलं रुलादितामूर्तं ॥ कृकलासमन्त्रिणां ॥ आ
मुदादिरुलं यकानयुग्मदियुगिष्टकृतां ॥ ॥ रुलादि ॥ वनस्थानि
प्रभायन्त्रनानागममेमादितं ॥ आहानसर्वद्वानं धूयायैयतिगृक
तां ॥ धूय ॥ सायकाशमहादीय सर्वेतिमित्रायरु ॥ सवाकृत्यैत
नं कृति दीयायैयतिगृकृतां ॥ दीय ॥ टायहान ॥ यावत्तुल्यक

वस्थयुवतिरुवतायावदाकाशगंगायवदाकाशमालेगगल
गलयतिगमयतिवृगलेशीशायवदुक्तापिताकीरुविकमवजनं व
दसिद्धाकवानिगावर्त्ययुगयोगाखजनयविरुतावर्द्धतत्राजलक्री
यतिश्चावलदाहावयु ॥ ॥ जय ॥ कां ३ ॥ धीं ३ ॥ (सी ३) ॥
रु २ ॥ २१ ॥ २४ ॥ १०८ ॥ ॥ द्यौजयखाहा ॥ मधुलकृया ३ ॥

कण्डवदकः गङ्गा ॥ नवात्मा ॥ कूटिका ॥ कोमानीवात्रवृषी
विकचनव ऊवायूष्यवर्धुयुवका सिद्धरेवकनके कनकमनिमयी
रुषितासुवमाला ॥ विद्यावा सिद्धिदात्री व नदव नृकला हीतिरु
मानमर्ह गायूका कि कीया कमलवनग नाद्यद्यत्रायूक साहा ॥
॥ माहा माया ॥ सर्वनाशु नि ॥ रुमाशु नि ॥ उजमानश मदान

वमीयाचेष्टध्रीको मा प्रिया गभर्जनयेडो संयुष्टयूजा विधान विधिय
प्रियुष्टुमस्तु ॥ ॥ तथेन ॥ ॥ उजमान अरुसख ॥
डाकावधृतयादात्यादि ॥ चन्दन सिद्धयूष्य ॥ समय विद्य ॥
अखकल सानदस्यादि ॥ ॥ तथेन ॥ यी कियतासनस्तुत्या
दि ॥ स्त्रीकार्य ॥ नासलिकाय ॥ वलि विस्तुन ॥ श्रीसूर्यसाकी

[illegible]

पूना ॥ प्रत्नमाला विविशुधः स्नानमानावले विनी ॥ अस्मादङ्गुलज्जिह्वान् दिव्यवस्तुनां शुधि
ना ॥ स्वद्वानेतत्तथा चक्रे वज्रकिङ्करी वनाधरे ॥ उमरु शूरबाणच दक्षिण नविना डिग ॥ रुट के
धनरुक्मन्त गदाघण्टासूत्रासिती ॥ यागतहनीरुक्मन्तः स्वदा अङ्कगया शर्की ॥ विन्दुमूडा
तथा सिद्धि सिंहासनायत्री सिद्धि ॥ सिंहासनसमावृताः महिषाया दवर्जिता ॥ महि
षासूत्रनिहन्ती च सर्वदेहविनाशनी ॥ (अस्मात्स्वाङ्गं हस्तं च ॥ स्वदा अङ्गुमरु

दादलोतागुडादवी वामदक विधाविही ॥ खड्गवाही तथाङ्कि निगुर्वक दकि ॥
 रुच्यन्वाकूणी पाणी कुंधाव वामककय ॥ सिंहसनसमानुराः महिवायदय निही ॥
 मूलकक वक्षतानि काधिर (छा) विद्यानिनि ॥ आयमानासदादवीः सर्वेऽगुरुयः
 करी ॥ ग्याया दवता वहाः कात्यायनी नमा कुं ॥ श्रीनमो ग्याय ॥ कात्यायनी द
 यः ॥ हाग कृष्णादि ॥ यन्मसिद्धयुक्तादि ॥ शुभ्रलि ॥ नमो ॥ डीम ॥ धीमहा

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ शृणु कथां गौतमी त्वं तर्जनी दक्षिण ध्वजा । उमन्मूला दुर्गका शी-
 क्षात्रयदास केशुज । सिंहासनगता दक्षीण त्वां वीरस्मिन्ध्वरी । महामहिषमावृणु-
 यायादनञ्जुनी । मूलं नमस्त्रिधाद्या नैव कुम्भध्वजं त्वेव च । काधवुषावता नीच-
 दाता नृ-
 यस्मिन्ध्वरी । उक्ता न्यासाश्च वृन्दं च युञ्जनी शमिन्ध्वरी । ध्यायमाना सदा नृ-
 नमामीस-
 वेदवता ॥ ध्यानयूष्यायायुः ॥ शुभं ध्वनी दक्षीणं गङ्गा शल्यादिचन्दनमिन्द्रयूष्याद्यादि ॥

शुभ्रि॥विजहंरथीरगवगीधीचलिकाखायनीकुम्भध्वनीयायूग॥नवंवलितयेदी॥
महाकानवलि॥मअश्मायरुद्रस्यादिनास॥आध्यादि८॥त्रिजहंमहाका लाय मह
भववाय००देमयायूषधूयदीयवर्लिगृद्धश्वाहा॥नवंवलितयेदी॥तत्तद्गुरु वलिम
॥मअश्मायरुद्रस्यादिनास॥आध्यादि८॥नवासनयायूग॥त्रिजहंकौक्यैक्यया
लायवर्लिगृद्धश्वाहा॥नवंवलितयेदी॥ ॥गततामूरुवलिम॥वअश्मायरुद्र

ASHA ARCHIVES

3007

ASHA ARCHIVES

29 3521051 1414 11